हल्दी-काजल से चित्रों में फूंकतीं हैं जान, विदेश तक बनाई पहचान

माई सिटी रिपोर्टर

पारंपरिक मधुबनी चित्रकला में माहिर शांति देवी को मिल चुका राष्ट्रपति पुरस्कार, पद्मश्री के लिए हैं नामित

कानपुर। 16 साल की उम्र में 9वीं तक पढ़ीं बिहार के मिथिला क्षेत्र की रहने वाली शांति देवी की शादी हो गई थी। घर-परिवार की जिम्मेदारी के बीच उन्होंने पारंपरिक मधुबनी चित्रकला को बिहार से विदेश तक पहुंचाया है। खास बात यह है कि वह चित्रों में रंग की जगह हल्दी-काजल जैसी प्राकृतिक चीजों का प्रयोग करती हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, पद्मश्री के लिए नामित और जी-20 समिट में प्रधानमंत्री मोदी के साथ शामिल होने वाली शांति सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर के छात्रों को मधुबनी पेंटिंग की बारीकियां सिखा रही हैं।

शांति कहती हैं कि पारंपरिक कला को खुद सीखा और अन्य महिलाओं को भी सिखाया। पहली पेंटिंग 1977 में जहां दो रुपये में बेची थी, हाल में उनकी पेंटिंग सात लाख रुपये में बिकी है। जापान, सिंगापुर, दुबई, मलयेशिया, हांगकांग, बैंकॉक सहित अन्य देशों में जाकर अपनी पेंटिंग की धाक जमा चुकीं शांति कहती है कि विदेशों में इन पेंटिंग की काफी मांग है। माना जाता है कि राजा जनक ने राम-सीता विवाह के दौरान महिला कलाकारों से चित्र बनवाए थे। लोग इसका प्रयोग मनोरंजन के रूप में करते थे, अब इसे व्यवसाय बना लिया है।

कार्यशाला के दौरान उन्होंने बच्चों को मधुबनी पेंटिंग के विभिन्न रूप जैसे कच्ची, भरनी, गोदना, तांत्रिक और गेरू गोबर के बारे में सिखाया। इन पेंटिंग में रंगों के बजाय काजल, हल्दी, गोबर का प्रयोग किया जाता है। इस दौरान उन्होंने लोक गीत भी गाया। उनके साथ उनके पति शिवन पासवान भी आए हैं। प्रधानाचार्या भावना गुप्ता ने कहा कि विद्यालय छात्रों को देश की प्रसिद्ध लोक चित्रकारी को सिखाने के लिए प्रयासरत है। एक महीने तक चलने वाली वर्कशॉप में 28 दिसंबर को विद्यालय में प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा।

सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर में पेंटिंग के बारे में जानकारी देतीं शांति देवी, शिवन पासवान व प्रधानाचार्या भावना गुप्ता। संवाद